ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-2* Issue-10* November- 2017
Innovation The Research Concept

'यथार्थ की उघहड़न' मनोविश्लेषणवाद

सारांश

मनोविश्लेषणवाद 'मनोविज्ञान' की ही एक शाखा है जो 20वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में उचित हुई थी। जिस प्रकार मनोविज्ञान 'मानव व्यवहार' का अध्ययन करता है उसी प्रकार मनोविश्लेषणवाद 'मन का विष्लेशण' कर मन के गर्त में छिपी हुई मूल प्रवृत्तियों का अध्ययन करता है। 20वीं शताब्दी में मनोविश्लेषणवाद अपने प्रारम्भिक रूप में केवल मन की व्याख्या तक सीमित रहा परन्तु धीरे–धीरे यह वर्तमान में बहुत अधिक प्रचलित हो गया। यह साहित्य के क्षेत्र में एक नई क्रांति लेकर आया जिसमें रचनाकारों ने अपने पात्रों के मानसिक, शारीरिक क्रियाकलापों के पीछे मन में छिपे हुए भावों को उत्तरदायी पाया।

सविता अधाना
सह प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गाँधी विश्वविद्यालय,
मीरपुर, रेवाड़ी, हरियाणा

मुख्य शब्द : मनोविश्लेषणवाद व मनोविज्ञान का सम्बन्ध, मनोविश्लेषणवाद की परिभाषाएँ, मनोविश्लेषणवाद में सिममण्ड फ्रायड एडलर और युंग का स्थान। साहित्य पर मनोविश्लेषणवाद का प्रभाव आदि।

प्रस्तावना

साहित्य सृजन में समय–समय पर विभिन्न व्यक्तियों, परिस्थितियों, क्रांतियों व सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और विभिन्न वादों का प्रभाव पड़ा। उसी प्रकार जब मनोविश्लेषणवाद का प्रर्वत्तन डॉ0 सिम्मण्ड फ्रायड ने किया तो उन्होंने इसकी व्यापक परिभाषाएँ दी कि किस प्रकार मानव मन ही उसकी गतिविधियों व विचारों का मूल कारण है। साहित्य के क्षेत्र में जैनेन्द्र इलाचन्द्र जोषी अज्ञेय आदि रचनाकारों के पात्रों के यथार्थवादी चित्रण पर फ्रायड प्रभाव परिलक्षित होता हुआ दिखाई देता है। यही कारण है कि यथार्थ के जिस नग्न चित्रण को इन साहित्यकारों ने अपनी लेखनी से चित्रित किया है वे असल में अपने मन की वासनाओं, कुण्डाओं दभित इच्छाओं के कारण ही वर्तमान में ऐसे हो गए है। इस प्रकार मनोविश्लेषणवाद अपना प्रभाव छोड़ता है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत् प्रस्तुत है।

1. मानव व्यवहार व यथार्थवादी साहित्य में मन की भूमिका का वर्णन करना।
2. मनोविज्ञान व मनोविश्लेषणवाद के परिप्रेक्ष्य में मानव मन की व्याख्या प्रस्तुत करना।
3. प्रस्तुत अध्ययन पाठकों को मन की स्थितियों से अवगत कराएगा जो मानव व्यवहार का मूल कारण है।
4. व्यक्ति की सोच व उसके कार्य के पीछे के मूल कारणों को जानने में पाठकों की सहायता करना।

उपकल्पना

प्रस्तावित शोध के विषय में यह परिकल्पना ली गई है कि मानव की वास्तविक स्थिति व उसके द्वारा किए गए अच्छे बुरे कार्यो को पीछे, उसके ऐसे व्यवहार के मूल कारणों की तह में जाकर निष्कर्ष निकालना।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध पत्र की अध्ययन विधि मुख्य रूप से विश्लेषणात्मक व विवेचनात्मक है जो सरकारी एवं गैर सरकारी स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं, विभिन्न पुस्तकों शोधपत्रों, इंटरनेट आदि का आश्रय लिया गया है।

मानव की गतिविधियों और स्वभाव का निर्धारण करने वाला वैज्ञानिक आधार पर निर्मित वाद है–मनोविश्लेषणवाद। यह मानव की मानविकी और कृत्यों का आधार लेकर व्याख्या करता है। यह मानव मन की आंतरिक प्रक्रियाओं का अध्ययन करने वाली आधुनिक अध्ययन पद्धति है।

आज के आधुनिक समाज, विचारधारा और जीवन के प्रति दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों को सबसे अधिक प्रभावित मनोविश्लेषण वाद ने किया है।

मनोविश्लेषणवाद का जन्म मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में 20वीं शताब्दी के उतरार्द्ध मे हुआ। आधुनिक युग में अनेक ऐतिहासिक कारणो, विज्ञान के नित्य नूतन आविष्कारों आदि सभी तत्थात्मक आधार वाले सिद्धान्तों ने मनुष्य के जीवन में घटनें वाली घटनाओं के मूल कारण के रूप में मानव मन एवं उसकी शक्तियों का वैज्ञानिक अध्ययन प्रारम्भ हुआ और मनोविज्ञान को इस प्रकार के अध्ययन का जन्मदाता माना जाता है। मनोविज्ञान को शाब्दिक अर्थ में मन का विज्ञान और इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के Psycho + Logus – Psycholagy जिसमें Psycho का अर्थ आत्मा`वनस तथा स्वहने विचार विमर्श करना (To talk or discuss) होता है। समय समय अनेक विद्धानों के द्वारा इसकी अनेक परिभाषाएँ दी गई। लेकिन सभी सहीं अर्थ की प्रतिती न करा पाई। आज के सन्दर्भ मे जो जो परिभाषाएँ प्रचलित है – ''मनोविज्ञान वह मानवीय विज्ञान है, जिसमें चेतन प्राणियों विषेशतः मानव की मानसिक क्रियाओं का अध्ययन होता है तथा जिनका निरीक्षण प्रत्यक्ष अनुभव के द्वारा किया जाता है।''[1] डॉ0 सुनीता कुमारी अज्ञेय के नारी चरित्रों का मनोवैज्ञानिक विश्लेषण (पृष्ठ–2)

इस प्रकार मानव व्यवहार का अध्ययन विश्लेषण मूल्यांकन व व्याख्या करने वाले विज्ञान के रूप में मनोविज्ञान का अर्थ निहित है। मनोविज्ञान से निकलने वाले सम्प्रदाओं गेस्टाल्टवादी, व्यवहार वादी, वातावरण वादी और इन्हीं में से एक मनोविश्लेषण वाद का उदय हुआ।''[2] (पृष्ठ –3)

मनोविश्लेषणवाद का प्रवर्तक मनोवैज्ञानिक चिकित्सक सिगमण्ड़ फ्रायड का जन्म 1856 में आस्ट्रिया में हुआ। उन्होने सिद्ध किया कि मनुष्य कार्य किसी ना किसी कारक से प्रेरित है और उसका कारण का पता लगाया जा सकता है। उन्होने मानव मन को कारण मानते हुए इसे तीन तहें बताई।

चेतन कांशरन, अद्धिचेतन, अवचेतन मन। डॉ0 बच्चन सिंह के शब्दों में चेतन मन सामाजिक प्रतिबंधो का मन है जिसमें सभ्यता, संस्कृति, आचार, विचार कहा जा सकता है।''[3] (आलोचना और आलोचना पृष्ठ–69)

चेतन मन में मनुष्य का क्रियाकलाप और गतिविधियां दिखाई देती है परन्तु इन क्रियाकलापों पर प्रभाव अन्तःकरण में छिपा अचेतन मन का होता है। मन में छिपी दमित वासनाएँ कुण्ठाएँ और अपूर्ण बलवती इच्छाएँ लगातार लावा रूप लेकर दहकती रहती है जो कभी न कभी मनुष्य की संवेदनाओ को विभिन्न कारणों से यथार्थ रूप में हमारे समक्ष लाकर खड़ा कर देती हैं।

''अपने नरक की बेतरतीबी में ही ढूँढ़ेगी वें। अपनी अपरिहार्यता की तसतली/खीस भरी प्रसन्नता के साथ।''[4] जहाँ की महिलाएँ हो गयी कहीं, पृष्ठ–37

कवि कर्म को मनोविश्लेषणवाद के सिद्धान्तों के रसायन में घोल कर जो क्रियाएँ हुई वह साहित्य में यथार्थ के चित्रण के रूप में उभर कर सामने आई। 20वीं शताब्दी में जहाँ मन का विष्लेशण जोरो पर था वहीं साहित्य के सृजक कारक के रूप में फ्रायड के सिद्धांतो के आवरण को ओढ़कर अज्ञेय, मुक्तिबोध, जैनेन्द्र, इलाचन्द्र जोशी आदि साहित्यकारों के साहित्य में निरूपित हो यर्थात चित्रण के द्वारा क्रोड में छिपे मानव मन की वह दमित काम वासना प्रस्तातित होती दिखाई देती है जो फ्रायड के काम वृत्ति के सिद्धांत के अनुरूप विक्षिप्त मन की अभिव्यक्ति यर्थात का रूप लेती हुई आज की नग्नता को भी पीछे छोड़ चुकी है।

घिर गया नभ/उमड़ आए मेघ काले/भुमि के कंपित उरोजों पर/छा गया इन्द्र का नील वक्ष/श्वासाहत तड़ित से झुलसा हुआ–सा।

मनोविश्लेषणवाद में प्रतिपादित मानव कृत्यों का मूलत्व कार्य है और अहम् की विभिन्न स्थितियों का पोषण पा अपने को व्यक्त कर स्थिति को परिघटित कर देते है। अर्थात मन मानव की कमजोरी है। जो इसके बस में होकर भी नहीं है। चेतन मन के रूप में हम अपने को सभ्य, शांत व शीलवान प्रदर्शित तो कर सकते है। लेकिन अवचेतन के रोद्र उत्पीड़न के आगे हार कर विक्षिप्त से हो जाते है।

''भूतल के सारे खनिज खंखोर कर/खनिज तेल की कौन कहें हो सके तो धरती के अंतरतम का/तृप्त प्रवित लौंह लहू भी पी जाना चाहती है उनकी पिपासा''[5]

ज्ञानेन्द्रपति संशयात्मा पृष्ट 246

फ्रायड मूलतः मनोचिकित्सक थे और रोगियों के उपचार की दृष्टि से ही उन्होंने सिद्धान्तों की स्थापना की। इन्हीं सिद्धान्तों का प्रभाव कला और साहित्य पर काफी पड़ा फ्रायड का मत है कि कला और धर्म दोनों का उद्भव अचेतन मन की संचित प्रेरणाओं और इच्छाओं में होता है। कलाकार अपनी काम–शक्ति के उदात्तीकरण के लिए ही सृजन करता है, साहित्य, चित्रकला, मूर्तिकला, काव्यकला, भाषण कला जनसेवा, धर्म आदि इसी काम–शक्ति के उदात्तीकृत विविध रूप है फ्रायड ने साहित्य सृजन की बात की है जो काम वृति स्वरूप में होगी तो साहित्य कल्याणकारी होगा और अन्य विध्वंसात्मक।

हिन्दी साहित्य में प्रयोगवाद काव्य व उनके कवि अज्ञेय, रामेश्वर शुक्ल 'अंचल' की कविताओं में मुक्त काम–वृति को मुखरता से उभारा गया है; जो फ्रायडीय यौनवाद का साहित्यिक उदात्तीकृत रूप है।

यथार्थ के रूप में मनोविश्लेषणवाद का हिन्दी उपन्यासों पर भी पड़ा और डॉ0 भारत भूषण ने दो वर्ग आचरणवादी और विश्लेषणवादी किए है।[6] (सम्पादक अशोक भाटिया, श्रेष्ठ साहित्यिक निबंध पृ0 389) इन उपन्यासों के कृता क्रमशः प्रेमचन्द और उनके उपन्यास सेवासदन में दरोगा कृष्णचंद के मन का अर्न्तद्वन्द, सुमन की अतृप्त काम इच्छांए आदि आचरणवादी मनोविज्ञान का प्रस्तुतीकरण करती है। इसी प्रकार 'ष्यामा स्वप्न' ठाकुर जगमोहन का एक स्वप्न, मनोविज्ञान पर आधारित उपचार है जो सत्य और मिथ्या का तानाबाना पिरोया है आगे आने वाले उपन्यासकारों में जैनेन्द्र की 'त्यागपत्र' की बात न की जाएगी विषय अपूर्ण ही होगा। मृणाल तक भारी के मनोवैज्ञानिक सूक्ष्म भावों को अपने दुःखी से अभिव्यक्त करती है। वहीं सुनीता का व्यवहार अर्न्तमन में स्थित अनेक विचारों की उथल–पुथल का भण्डार है।

वही 'सुखदा' मनोविश्लेषणवादी विद्वान युंग के सिद्धान्त 'हीन भावना' के कारण अर्न्तमुखी होने के कारण

अपनी क्षमता को नहीं पहचान पाती। जैनेन्द्र की पीढ़ी के उपन्यासकार इलाचन्द्र जोषी मनोवैज्ञानिकता के सोचे में ढाले हुए पात्र व उपन्यास दिखाते है जैसे– 'प्रेत और छाया', 'पर्दे की रानी' और संन्यासी आदि।

आधुनिक समय को भी लेखकों की और कवियों की लम्बी कतारें हैं जैसे ज्ञानेन्द्रपति, कात्यायनी, लीलाधर जंगुडी, उदय प्रकाष, चन्द्रकान्त देवताले आदि जो अपनी लेखनी को इस ओर ले जाते हुए दिखाई देते हैं। इन लेखकों ने मानव के व्यवहार और यहां तक प्रकृति और मानव सम्बन्धों को भी मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों के दायरे में ला खडा किया है।

''सुसभ्य है हम सचमुच? कांवडो से नहीं। बमों, मिसाइलों से रौंदते इस पृथ्वी को, बारूदी धुंए से उढेलते वायुमंडल खांसती, हांफती–कांपती/मानवता किस ओर ताके–[4]''

ज्ञानेन्द्रपति संशयात्मा पृष्ठ 103।

निष्कर्ष

मनोविश्लेषण का सिद्धान्त मानव के चरित्र व मन के विचारों के पीछे के बीहड़ जंगल के अंधकार की अभिव्यक्ति है जो यथार्थ रूप में अनुभूतियों व वेंदना के माध्यम से उधड़कर अपनी छिपी हुई अनैतिकता, अतिविश्वास, भय, त्रांस, घुटन, काम वासना का अतृप्त इच्छाएं और समाज व संस्कारों के कारण पीछे छुटी वह चेतना है जो स्फूटित होकर अपनी अभिव्यक्ति से कुछ तोश प्राप्त करती है।

''जिंदगी को भूलभूलैया मानकर/मैं दौड़ता और छटपटाता/अटकता/भटकता जिसे खोजता रहा हूँ। वह द्वार/मेरे मन में था''

भारत भूषण अग्रवाल उतना कह सूरज
(कविता समाप्ति) पृष्ठ–18

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *डॉ0 सुनीता कुमारी – अज्ञेय के नारी पात्रों में मनोवैज्ञानिक चित्रण पृष्ठ–2*
2. *वहीं पृष्ठ–3*
3. *डॉ0 बच्चन सिंह आलोचना ओर आलोचना पृ0–69*
4. *जहाँ की महिलाएँ हो गयी कहीं पृ0–37*
5. *ज्ञानेन्द्रपति संशयात्मा पृष्ठ–246*
6. *संम्पादक अषोक भाटिया, श्रेष्ठ निबंध, पृष्ठ–389*
7. *ज्ञानेन्द्रपति, संशयात्मा, पृष्ठ–103*
8. *भारत भूषण अग्रवाल– उतना वह सूरज पृ0–18 (कविता समाप्ति) से।*